

**“मीठे बच्चे – तुम जिसकी आज तक महिमा गाते थे,
वही अब तुम्हारे सामने हाज़िर है,
इसलिए सदैव खुशी में नाचते रहो, किसी बात का गम न हो”**

प्रश्न:- पुरुषार्थी बच्चे अपने दिल के अन्दर कौन-सी जांच अवश्य करेंगे?

उत्तर:- अभी तक मुझ आत्मा में कोई छोटा-मोटा काँटा तो नहीं है? काम का काँटा सबसे तीखा है। क्रोध का काँटा भी बहुत खराब है। देवतायें क्रोधी नहीं होते इसलिए मीठे बच्चे कोई काँटा हो तो निकाल दो। अपने आपको घाटे में मत डालो।

गीत:- तुम मात पिता...

धारणा के लिये मुख्य सार:-

- 1) अविनाशी बाप से सच्चा-सच्चा अविनाशी व्यापार करना है। उस सौदे के साथ इस सौदे में भी समय देना है। ज्ञान गंगा बन सबको पावन बनाना है।
- 2) ब्राह्मण जीवन का आधार मुरली है जो प्यार से सुननी और सुनानी है। अन्दर कोई भी काँटा हो तो उसे निकाल देना है। अवगुणों का दान करना है।

वरदान:- रहमदिल की भावना द्वारा
अपकारी पर भी उपकार करने वाले शुभचिंतक भव

कैसी भी कोई आत्मा, चाहे सतोगुणी, चाहे तमोगुणी सम्पर्क में आये लेकिन सभी के प्रति शुभचिंतक अर्थात् अपकारी पर भी उपकार करने वाले। कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा दृष्टि न हो क्योंकि जानते हो यह अज्ञान के वशीभूत है, बेसमझ है। उनके ऊपर रहम वा स्नेह आये, घृणा नहीं। शुभचिंतक आत्मा ऐसा नहीं सोचेगी कि इसने ऐसा क्यों किया लेकिन इस आत्मा का कल्याण कैसे हो – यही है शुभचिंतक स्टेज।

स्लोगन:- तपस्या के बल से असम्भव को सम्भव कर
सफलता मूर्त बनो।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

वह त्रिकालदर्शी होने के कारण आत्मा के सम्पूर्ण सहयोग को सामने रखते हुए, हर आत्मा की कमज़ोरी को परखते हुए उसकी कमज़ोरी को स्वयं में धारण नहीं करेगा, वर्णन नहीं करेगा लेकिन अन्य आत्माओं की कमज़ोरी का काँटा कल्याणकारी स्वरूप से समाप्त कर देगा। कांटे के बजाए – कांटे को भी फूल बना देगा।

“मीठे बच्चे – अब सीखने के साथ-साथ टीचर बन सिखाना भी है, यह पढ़ाई इस अन्तिम जन्म के लिए ही है, इसलिए अच्छी रीति पढ़ो और पढ़ाओ”

प्रश्न:- सतयुगी राजधानी किस आधार पर स्थापन होती है?

उत्तर:- संगम की पढ़ाई के आधार पर। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं अथवा जिन पर ब्रह्मपति की दशा है वह सूर्यवंशी में आते हैं। जो पढ़ते नहीं, सर्विस नहीं करते उन पर बुध की दशा बैठती, वह जैसे बुद्ध हैं। वह प्रजा में आ जाते हैं। ऊंच प्रजा, नौकर चाकर आदि सब इस समय की पढ़ाई के आधार पर ही बनते हैं।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

- 1) अब टॉकी से मूवी, मूवी से साइलेन्स में जाना है, इसलिए टॉकी (बातचीत) बहुत कम करनी है। रॉयल्टी से बहुत आहिस्ते बोलना है।
- 2) नॉलेज समझने के बाद तीव्र पुरुषार्थ कर सतोप्रधान बनना है। याद का चार्ट रखना है।

**वरदान:- इस लोक के लगाव से मुक्त बन
अव्यक्त वतन का सैर करने वाले उड़ता पंछी भव**

बुद्धि रूपी विमान से अव्यक्त वतन व मूलवतन का सैर करने के लिए उड़ता पंछी बनो। बुद्धि द्वारा जब चाहो, जहाँ चाहो पहुँच जाओ। यह तब होगा जब बिल्कुल इस लोक के लगाव से परे रहेंगे। यह असार संसार है, इस असार संसार से जब कोई काम नहीं, कोई प्राप्ति नहीं तो बुद्धि द्वारा भी जाना बन्द करो। यह रौरव नर्क है इसमें जाने का संकल्प और स्वप्न भी न आये।

**स्लोगन:- अपने चेहरे और चलन से
सत्यता की सभ्यता का अनुभव कराना ही श्रेष्ठता है।**

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

जो परोपकार की भावना से सम्पन्न है, वह सदा सन्तुष्टमणी के समान स्वयं भी सन्तुष्ट होगा और सर्व को भी सन्तुष्ट करने वाला होगा। कमाल यह है जो होपलेस में होप पैदा कर देगा, जिसके प्रति सब निराशा दिखायें, ऐसे व्यक्ति वा ऐसी स्थिति में सदा के लिए उनकी आशा के दीपक जगा देगा। अपने उपकार की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह-उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बना देगा अर्थात् भिखारी को बादशाह बना देगा।

**“मीठे बच्चे – देरी से आते हुए तेज़ पुरुषार्थ करो
तो बहुत आगे जा सकते हो,
दूसरों की चिंता छोड़ अपने पुरुषार्थ में लग जाओ”**

प्रश्न:- कौन-सा कर्तव्य एक बाप का है जो कोई मनुष्य का नहीं हो सकता?

उत्तर:- मनुष्य को देवता बनाना, उसे शान्तिधाम, सुखधाम का मालिक बना देना, यह कर्तव्य एक बाप का ही है जो कोई मनुष्य नहीं कर सकता। तुम्हें निश्चय है संगम पर ही हम भगवानुवाच सुनते हैं। अभी स्वयं भगवान कल्प पहले मुआफ़िक राजयोग सिखला रहे हैं।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

- 1) जब कोई क्रोध करता है तो बहुत-बहुत शान्त रहना है। क्रोधी के साथ क्रोधी नहीं बन जाना है। माया के किसी भी तूफान से हारना नहीं है।
- 2) सवेरे-सवेरे बाप को याद करना है, अपनी कमाई जमा करनी है। पवित्रता की पक्की राखी बांधनी है।

**वरदान:- अपने अव्यक्त शान्त स्वरूप द्वारा
वातावरण को अव्यक्त बनाने वाले साक्षात मूर्त भव**

जैसे सेवाओं के और प्रोग्राम बनाते हो ऐसे सवेरे से रात तक याद की यात्रा में कैसे और कब रहेंगे यह भी प्रोग्राम बनाओ और बीच-बीच में दो तीन मिनट के लिए संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप कर लो, जब कोई व्यक्त भाव में ज्यादा दिखाई दे तो उनको बिना कहे अपना अव्यक्ति शान्त रूप ऐसा धारण करो जो वह भी इशारे से समझ जाये, इससे वातावरण अव्यक्त रहेगा। अनोखापन दिखाई देगा और आप साक्षात्कार कराने वाले साक्षात मूर्त बन जायेंगे।

स्लोगन:- सम्पूर्ण सत्यता ही पवित्रता का आधार है।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

अगर कोई आपके सहयोगी भाई व बहन, परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान देकर के स्वयं निर्मान बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है।

**“मीठे बच्चे – तुम्हें अब आवाज से परे जाना है
इसलिए मुख से शिव-शिव कहने की भी दरकार नहीं है”**

प्रश्न:- एक बाप को ही सर्वशक्तिमान्, ज्ञान का सागर कहेंगे, दूसरों को नहीं – क्यों?

उत्तर:- क्योंकि एक बाप को ही याद करने से आत्मा पतित से पावन बन जाती है। बाप ही है जो पतितों को पावन बना देते हैं, बाकी कोई भी देहधारी मनुष्य पावन बना नहीं सकते। बाप तुम्हें रावण राज्य से मुक्त कर देते हैं। तुम शिवबाबा से शक्ति लेते हो, जितना जास्ती याद करेंगे उतना शक्ति मिलेगी और खाद निकलती जायेगी।

गीत:- ओम् नमो शिवाए...

धारणा के लिये मुख्य सार:-

- 1) मन्सा, वाचा, कर्मणा किसी को भी दुःख नहीं देना है। बुरे संस्कारों को निकाल अभी अच्छे संस्कार धारण करने हैं। कोई विकर्म न हो इसका ध्यान रखना है।
- 2) इस विचित्र ड्रामा में अपने श्रेष्ठ भाग्य को देखते हुए अपने आपसे बातें करनी है कि हम भगवान के साथ पार्टधारी हैं। कितना अच्छा हमारा पार्ट है।

**वरदान:- स्नेह के रिटर्न में समानता का अनुभव करने वाले
सर्वशक्ति सम्पन्न भव**

जो बच्चे बाप के स्नेह में सदा समाये हुए रहते हैं उन्हें स्नेह के रेस्पॉन्स में बाप समान बनने का वरदान प्राप्त हो जाता है। जो सदा स्नेहयुक्त और योगयुक्त हैं वह सर्व शक्तियों से सम्पन्न स्वतः बन जाते हैं। सर्व शक्तियाँ सदा साथ हैं तो विजय हुई पड़ी है। जिन्हें स्मृति रहती कि सर्वशक्तिमान् बाप हमारा साथी है, वह कभी किसी भी बात से विचलित नहीं हो सकते।

**स्लोगन:- पुरुषार्थी जीवन में जो सदा सन्तुष्ट और
खुश रहने वाले हैं वही खुशानसीब हैं।**

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

इस समय ऐसा परोपकारी ग्रुप चाहिए जो देने वाला दाता हो। जैसे सम्पन्न राजायें सदा प्रजा को देने वाले होते हैं। सम्पन्न राजाओं का हाथ कभी भी लेने वाला नहीं होगा, देने वाला होगा। आप बच्चे तो स्वर्ग के विश्व महाराजा बन दाता रूप का पार्ट बजाने वाले हो तो अभी से वही संस्कार स्वयं में भरों।

पूरी मुरली के लिए वेबसाइट: www.madhubanmurli.org

**“मीठे बच्चे – तुम जानते हो कि सभी आत्मायें
बेहद के बाप से पढ़ेंगी नहीं लेकिन साथ में जरूर जायेंगी”**

प्रश्न:- चक्रवर्ती राजा बनने वाले बच्चों को किस बात का बहुत-बहुत कदर होगा?

उत्तर:- उन्हें पढ़ाई का बहुत कदर होगा। कहाँ भी रहते पढ़ाई जरूर पढ़ेंगे। साथ-साथ मित्र सम्बन्धियों से तोड़ निभाते याद में रहने का अभ्यास करेंगे और सबको यही पैगाम देंगे कि बाप को याद करो तो शान्तिधाम-सुखधाम में चले जायेंगे। इस श्रीमत पर पूरा-पूरा चलने वाले बच्चे ही चक्रवर्ती बनते हैं।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

- 1) विनाश की भावी को जान पूरा-पूरा श्रीमत पर चलना है। याद के बल से विश्व की बादशाही लेने का पुरुषार्थ करना है, अपनी जगी हुई ज्योत से सबकी ज्योत जगाकर सच्ची दीपावली मनानी है।
- 2) स्तुति-निंदा सब कुछ सहन करते हुए बाप समान प्यार का सागर बनना है। चलन बड़ी रॉयल रखनी है। बात बहुत कम करनी है।

**वरदान:- समय पर हर गुण वा शक्ति को यूज करने वाले
अनुभवी मूर्त भव**

ब्राह्मण जीवन की विशेषता है अनुभव। अगर एक भी गुण वा शक्ति की अनुभूति नहीं तो कभी न कभी विघ्न के वश हो जायेंगे। अभी अनुभूति का कोर्स शुरू करो। हर गुण वा शक्ति रूपी खजाने को यूज करो। जिस समय जिस गुण की आवश्यकता है उस समय उसका स्वरूप बन जाओ। नॉलेज की रीति से बुद्धि के लॉकर में खजाने को रख नहीं दो, यूज करो तब विजयी बन सकेंगे और वाह रे मैं का गीत सदा गाते रहेंगे।

**स्लोगन:- नाजुकपन के संकल्पों को समाप्त कर
शक्तिशाली संकल्प रचने वाले ही डबल लाइट रहते हैं।**

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

जो स्वयं के प्रति इच्छा मात्रम् अविद्या है, अखण्ड दानी है, वही परोपकारी है। जैसे बाप ने स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्मान बन बच्चों को मान दिया। पहले बच्चे – नाम बच्चे का काम अपना। काम के नाम की प्राप्ति का भी त्याग किया। नाम में भी परोपकारी बने। ऐसे फॉलो फादर करो।

पूरी मुरली के लिए वेबसाइट: www.madhubanmurli.org

**“मीठे बच्चे – मन्सा-वाचा-कर्मणा किसी को भी दुःख नहीं देना,
कभी किसी पर गुस्सा नहीं करना, प्यार बहुत मीठी चीज़ है,
इससे किसी को भी वश कर सकते हो”**

प्रश्न:- बाप बच्चों को डबल सिरताज विश्व का मालिक बनने व दी बेस्ट बनने की कौन-सी युक्ति बताते हैं?

उत्तर:- दैवीगुण धारण कर बहुत-बहुत मीठा बनो। एक दो को भाई-भाई अथवा भाई-बहिन की दृष्टि से देखो। अपने पुरुषार्थ से अपने को राजतिलक दो। 2- स्वयं ईश्वर बाप तुम्हें पढ़ा रहे हैं तो पढ़ाई में रेग्युलर बनो, जितना पढ़ेंगे पढ़ाएंगे, अपने मैन्स सुधारेंगे उतना दी बेस्ट बनेंगे।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

- 1) ईश्वरीय सर्विस में कभी थकना नहीं है, अच्छा टीचर बन आप समान बनाने की सेवा करनी है।
- 2) याद के बल से आत्मा को कंचन बनाना है, कोई भी देहधारी में ममत्व नहीं रखना है।

**वरदान:- साइलेन्स की शक्ति द्वारा सेकण्ड में
हर समस्या का हल करने वाले एकान्तवासी भव**

जब कोई भी नई वा शक्तिशाली इन्वेन्शन करते हैं तो अन्डरग्राउण्ड करते हैं। यहाँ एकान्तवासी बनना ही अन्डरग्राउण्ड है। जो भी समय मिले, कारोबार करते भी, सुनते-सुनाते, डायरेक्शन देते भी इस देह की दुनिया और देह के भान से परे साइलेन्स में चले जाओ। इस अभ्यास वा अनुभव करने कराने की स्टेज हर समस्या का हल कर देगी। इससे एक सेकण्ड में किसी को भी शान्ति वा शक्ति की अनुभूति करा देंगे। जो भी सामने आयेगा वह इसी स्टेज में साक्षात्कार का अनुभव करेगा।

**स्लोगन:- व्यर्थ संकल्प वा विकल्प से किनारा कर
आत्मिक स्थिति में रहना ही योगयुक्त बनना है।**

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

ब्रह्मा बाप ने बच्चों को मालिक बनाया और स्वयं को सेवाधारी के रूप में रखा। मालिक-पन का मान भी दिया, शान भी दिया, नाम भी दिया। कभी अपना नाम नहीं किया – मेरे बच्चे। तो जैसे बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, परोपकार किया, स्वयं का सुख बच्चों के सुख में समझा। बच्चों की विस्मृति के कारण दुःख का अनुभव सो अपना दुःख समझा। ऐसे फॉलो फादर कर परोपकार की भावना से सम्पन्न बनो तब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न होगा।

पूरी मुरली के लिए वेबसाइट: www.madhubanmurli.org

“सेवाओं के साथ-साथ एक दो के सहयोगी बन वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ, मनजीत बन आत्माओं की मन्सा सेवा करो”

- ❖ आज विशेष स्नेह का दिन है। चारों ओर के बच्चे स्नेह स्वरूप से मिलन मना रहे हैं।
- ❖ ब्रह्मा बाप ने जीवन में ही फरिश्तापन का स्वरूप दिखाया। सदा बेफिक्र बादशाह रहा, ऐसे ही आप बच्चों को भी अभी बाप समान बेफिक्र बादशाह फरिश्ता बनना ही है।
- ❖ अभी समय अनुसार जितना सेवा का उमंग-उत्साह प्रैक्टिकल में है इतना ही अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना और बनाना, सम्पन्न बनना और बनाना, इस प्वाइंट के ऊपर भी अभी स्वयं भी उमंग-उत्साह में रहना और वायुमण्डल में भी उमंग-उत्साह दिलाना।
- ❖ बापदादा यह होमवर्क देने चाहता है कि यह दो मास हर एक बच्चा मन के व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय के बचत की अपने प्रति विधि बनावे। इन दो मास में हर एक अपना चार्ट रखे कि व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के ऊपर कितना कन्ट्रोल किया?
- ❖ अभी कर्मातीत बनना है, समय समीप आ रहा है। चलते-फिरते स्वराज्य अधिकारी बनना ही है। यह संस्कार आप ब्राह्मण बच्चों के ही हैं। डबल राज्य, स्वराज्य और फिर भविष्य में विश्व राज्य।

**वरदान:- स्वमान की सीट पर स्थित रह
माया को सरेण्डर कराने वाले श्रेष्ठ स्वमानधारी भव**

संगमयुग का सबसे श्रेष्ठ स्वमान है मास्टर सर्वशक्तिमान की स्मृति में रहना। जैसे कोई बड़ा ऑफीसर वा राजा जब स्वमान की सीट पर स्थित होता है तो दूसरे भी उसे सम्मान देते हैं, अगर स्वयं सीट पर नहीं तो उसका आर्डर कोई नहीं मानेंगे, ऐसे आप भी स्वमानधारी बन अपने श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर सेट रहो तो माया आपके आगे सरेण्डर हो जायेगी।

स्लोगन:- साक्षीपन की स्थिति में रह दिलाराम के साथ का अनुभव करने वाले ही लवलीन आत्मा हैं।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

अपकारी पर भी उपकार करना, यही ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है। जैसे बाप ने ग्लानि को भी कल्याणकारी दृष्टि से देखा। उपकारी पर उपकार तो दुनिया वाले भी करते हैं, भक्त आत्मायें भी करते हैं लेकिन ज्ञानी तू आत्मा का अर्थ है सर्व के प्रति कल्याण की भावना, अकल्याण संकल्प मात्र भी नहीं हो। अपकारियों पर भी उपकार करे तब कहेंगे विश्व कल्याणकारी।

पूरी मुरली के लिए वेबसाइट: www.madhubanmurli.org